International Journal of Creative Research and Innovation (IJCRI) Vol-5, Issue-7, 2020 | ISSN: 2581-6829, http://www.edusanchar.com

''कोटा विश्वविद्यालय के द्विवर्षीय बी.एड. पाठ्यक्रम का विश्लेषणात्मक अध्ययन''

"An Analytical Study of Two Year B.Ed. Curriculum of Kota University"

GUIDE NAME- DR. SAVITRI SINGWAL
Research Scholar - Laxmi Kumari

प्रस्तावना

भारत का निर्माण उसकी कक्षाओं में होता है –

– कोठारी शिक्षा आयोग

शिक्षा समाज और राष्ट्र की प्रगति का प्रतिबिम्ब होती है। यह समाज, राष्ट्र व विश्व की शक्ति है जो एकता, दुःख और समृद्धि के आधार के रूप में राष्ट्र को गौरवान्वित करती है। शिक्षक शिक्षा का मुख्य ध्येय अध्यापक का सर्वांगीण विकास करना होता है इसे प्राप्त करने के लिए अध्यापक के मानसिक स्तर, पाठ्यक्रम, रूचि, आवश्यकता व योग्यता को आधार बनाया जाता है। यह कार्य उचित पाठ्यक्रम का निर्माण करके किया जा सकता है।

शिक्षा अनुभव के पुनर्निमाण की अविराम है जिसका प्रयोजन उसकी समाजिक अन्तर्वस्तु को और अधिक गहरा तथा विस्तृत बनाना है। शिक्षा के माध्यम से आधुनिकीकरण एवं विकास के लिए वांछित परिवर्तनो को लागू किया जा सकता है और उसे जन साधारण तक आसानी से पहुंचया जा सकता है। मानव पृथ्वी पर ईश्वर की सर्वश्रेष्ट कृति, मानव जीवन के मुख्य रूप से दो पक्ष होते है–

(i) शारीरिक पक्ष –

(ii) सामाजिक पक्ष

सामाजिक पक्ष मानव के सामाजिक परिवेश से प्रभावित होता है जिसमें शिक्षा एक मुख घटक के रूप में कार्य करती है। यह मनुष्य को समस्त मानवीय गुणो से उत्पन्न करके अखिल विश्व के प्राणी मात्र में उसे गौरव पूर्ण उच्चतम शिखर पर आसीन करती है। शिक्षा व्यक्ति के शारीरिक विकास के साथ–साथ धैर्य, विवके, सहिष्णुता, बौद्धिक और सामाजिक सफलता आदि गुणो से अलंकृत करते हुये उसे युगानुकुल समाज के परिवर्तित परिवेश में सुखमय जीवन जीने की कला सिखाती है। अर्थात शिक्षा व्यक्ति का सर्वागिण विकास करती है।

शिक्षा दर्शन का उदगम एवं शिक्षा व्यवयस्था में परिवर्तन भी कुछ इसी का उदाहरण है। जिसमें हम वर्तमान स्थिति को उपयुक्त मानकर भी उसमे सुधार लाने के लिए नवीन सुझाव, कार्य तथा व्यवहार अपनाते है। हमारे देश के शिक्षाविदो, चिन्तको एवं मनीषियों में सदैव शिक्षा के सर्वांगीण विकास के आवश्यकता को अनुभव किया इस हेतु सदैव नवीन नीति निर्माण के लिए प्रयासरत रहे। हम जानते है

कि किसी भी संस्कृति के स्वरूप का निर्धारण शिक्षा ही करती है। शिक्षा ही वह साधन है जिसके माध्यम से नवसंस्कृति का जन्म, उसका पुष्पन एवं पल्लवन होता है। शिक्षा के माध्यम से ही श्रेष्ठ गुणो को एक पीढी से दूसरी पीढी में हस्तान्तरित किया जाता है। हमारी शिक्षा व्यवस्था में समग्र रूप से दृष्टिपात करने पर ज्ञात होता है कि निरन्तर नवीन शिक्षा नीतियों के निर्माण एवं उनके सुझावो को जोड़ने पर भी इसमें आंशिक कमियो देखी जाती है। उन कमियों को जानने एवं सुधार हेतु आवश्यक सुझाव प्रेषित करने के लिए प्रस्तुत शोध कार्य को एक महत्वपूर्ण पहल माना गया है।

व्यक्तिगत, सामाजिक एवं राष्ट्रीय जीवन में शिक्षा के कार्यों का अध्ययन करने से स्पष्ट होता है कि शिक्षा एक चेतन, अर्थपूर्ण, सौद्देश्य प्रक्रिया है, सामाजिक परिवर्तन के महत्वपूर्ण कारक के रूप में भी शिक्षा की अपनी भूमिका है।

शिक्षा विज्ञान प्रौद्योगिकी के इस युग में शिक्षा व्यवस्था ही समाज के व्यक्तियों की सफलता एवं सुरक्षा को निर्धारित करती है। जहां शिक्षा व्यक्ति के सर्वांगीण विकास, सामाजिक और राष्ट्रीय प्रगति का एक महत्वपूर्ण घटक है वहीं सभ्यता व संस्कृति के उत्थान के लिए भी अनिवार्य है। वर्तमान में हम देख रहे है कि भारतीय संस्कृति का स्वरूप दिन प्रति दिन परिवर्तित होता जा रहा है और पाश्चात्य संस्कृति का अन्धानुकरण बढ रहा है।

वर्तमान सामाजिक परिवेश पर दृष्टिपात करने के बाद यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि शिक्षा व्यवस्था के माध्यम से ही राष्ट्र की अधिकांश समस्याओं का हल खोजा जा सकता है। इसी उद्देश्य से हमारे शिक्षाविदो ने समय–समय पर विद्यालय पाठ्यक्रम एवं शिक्षक–त्रशिक्षा कार्यक्रम में भी कई आवश्यक संशोधन एवं परिवर्तन किये है। आधुनिक शिक्षा प्रणाली में पाठ्यक्रम का प्रमुख स्थान है। शिक्षा में निर्धारित लक्ष्यों की प्राप्ति हेतु विद्यार्थियों को अपने ज्ञान का विकास करने के लिए तथा अध्यापकों के मार्गदर्शन के लिए पाठ्यक्रम अति आवश्यक होता है।

वर्तमान समय में अध्यापक शिक्षा के पाठ्यक्रम के परिक्षण का प्रयास अधिक महत्वपूर्ण है। शिक्षक शिक्षा का अभिप्राय किसी व्यक्ति को इस व्यवसाय में प्रशिक्षण प्रदान करने की प्रक्रिया है। शिक्षक ही समाज की वह मजबूत कड़ी है जो बालकों में प्रजातान्त्रिक, धर्म निरपेक्षता तथा सामाजिक, नैतिक व व्यक्तिगत मूल्यों का विकास करता है।

अतः यह प्रथम आवश्यकता है कि पहले शिक्षक स्वयं इन श्रेष्ठ मूल्यों को ग्रहण करें। विकासशील राष्ट्र में शिक्षक पहली आधारशिला है जो उसके भविष्य के निर्माण की भूमिका तय करते हैं। यदि हमारा राष्ट्र श्रेष्ठ राष्ट्रों में गिना जाये तो पहली आवश्यकता है वहाँ के शिक्षक सुसंस्कारित हो, प्रशिक्षित हो, श्रेष्ठ आदर्शों के ज्ञात हो।

शिक्षक स्वयं श्रेष्ठ मूल्यों को ग्रहण करे और समाज में भविष्य द्वारा बनकर तत्कालीन समाज के साथ घनिष्ठता स्थापित करें।

समस्या कथन

''कोटा विश्वविद्यालय के द्विवर्षीय बी.एड. पाठ्यक्रम का विश्लेषणात्मक अध्ययन''

"An Analytical Study of Two Year B.Ed. Curriculum of Kota University"

शोध के उद्देश्य –

1. कोटा विश्वविद्यालय के द्विवर्षीय बी.एड. पाठ्यक्रम के प्रारूप का विस्तृत अध्ययन करना।
2. कोटा विश्वविद्यालय के द्विवर्षीय बी.एड. पाठ्यक्रम की मूल्यांकन प्रक्रिया का अध्ययन करना।
3. कोटा विश्वविद्यालय के द्विवर्षीय बी.एड. पाठ्यक्रम के प्रति प्रशिक्षणार्थियों प्राध्यापको का अभिमत जानना।
4. कोटा विश्वविद्यालय के द्विवर्षीय बी.एड. पाठ्यक्रम के प्रति प्राध्यापको का अभिमत

न्यादर्श –

इस शोध कार्य में कोटा शहर में संचालित शिक्षक शिक्षा महाविद्यालयों में से यादृच्छिक विधि में 20 शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों का चयन किया गया है।

1. उपरोक्त चयनित 20 शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय के समस्त प्राध्यापकों को शामिल किया गया है।
2. 400 बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों/छात्राध्यापिकाओं का चयन उपरोक्त 20 शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों में से किया गया है।

शोध विधि – प्रस्तुत अध्ययन समूह पर आधारित है। अतः सर्वेक्षण विधि का ही चयन किया गया है।

शोध प्रविधि – प्रस्तुत शोधकार्य हेतु दत्तों के संकलन के लिए ''प्रतिशत प्रविधि'' का प्रयोग किया गया।

उपकरण – प्रस्तुत शोधकार्य से संबंधित सूचनाओं, दत्तों को एकत्रित करने हेतु निम्न उपकरण का प्रयोग किया गया।

स्वनिर्मित प्रश्नावली – प्राध्यापकों के लिए।
विद्यार्थियों के लिए।

अध्यायन से प्राप्त निष्कर्ष –

प्राध्यापको से प्राप्त निष्कर्ष

कोटा विश्वविद्यालय के द्विवर्षीय बी.एड. पाठ्यक्रम के विश्लेषणात्मक अध्ययन के प्रति प्राध्यापको से प्राप्त अभिमत के आधार पर निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त हुए।

(i) कोटा विश्वविद्यालय के द्विवर्षीय बी.एड. पाठ्यक्रम में अधिगमकर्ता मुख्य घटक है। जिसका पूर्ण संज्ञान बी.एड पाठ्यक्रम में लिया गया है।

(ii) कोटा विश्वविद्यालय के द्विवर्षीय बी.एड. पाठ्यक्रम में बालक के शारीरिक, सामाजिक, मनोवैज्ञानिक, सांस्कृति, नैतिक, संवेगात्मक विकास, चारित्रिक एवं सर्वांगिण विकास का ज्ञान अधिगमकर्ता को उपलब्ध कराता है।

(iii) कोटा विश्वविद्यालय के द्विवर्षीय बी.एड. पाठ्यक्रम में सामाजिक परिस्थितियों तथा भारतीय समाज के सभी पहलुओं पर प्रकाश डाला गया है।

(iv) कोटा विश्वविद्यालय के द्विवर्षीय बी.एड. पाठ्यक्रम में प्रयुक्त विषय–वस्तु विद्यार्थियों में शैक्षिक एवं सामाजिक मूल्यों का विकास करता है।

(v) कोटा विश्वविद्यालय के द्विवर्षीय बी.एड. पाठ्यक्रम विद्यार्थियों को समाज के प्रति संवेदनशील बनाने में सहायक है।

(vi) कोटा विश्वविद्यालय के द्विवर्षीय बी.एड. पाठ्यक्रम में सामाजिक एवं दार्शनिक विमर्श को शिक्षा के संदर्भ में महत्वपूर्ण एवं उपादेय बनाता है।

(vii) कोटा विश्वविद्यालय के द्विवर्षीय बी.एड. पाठ्यक्रम अधिगमकर्ता में स्वअधिगम व स्वाअध्याय की प्रेरणा उत्पन्न करता है।

(viii) कोटा विश्वविद्यालय के द्विवर्षीय बी.एड. पाठ्यक्रम राष्ट्र के उभरते हुए मुददो जैसे शान्ति–शिक्षा, लेंगिक संवेदनशीलता, समावेशी शिक्षा, संवेगात्मक आकांक्षाओं तथा समाजोपयोगी विचारधारा प्रस्तुत करता है।

छात्राध्यापको से प्राप्त निष्कर्ष

(i) कोटा विश्वविद्यालय के द्विवर्षीय बी.एड. पाठ्यक्रम केवल ज्ञानार्जन तक ही सीमित नहीं है बल्कि व्यवहारिक प्रशिक्षण पर बल देता है।

(ii) कोटा विश्वविद्यालय के द्विवर्षीय बी.एड. पाठ्यक्रम आत्मविश्लेषणात्मक तथा समालोचनात्मक चिन्तन विकसित करता है।

(iii) कोटा विश्वविद्यालय के द्विवर्षीय बी.एड. पाठ्यक्रम भारतीय सामाजिक परिवेश के अनुकूल है।

(iv) कोटा विश्वविद्यालय के द्विवर्षीय बी.एड. पाठ्यक्रम में किशोरावस्था के पहलुओं को मनोवैज्ञानिक सिद्धान्तो के आधार पर प्रस्तुत किया गया है।

(v) कोटा विश्वविद्यालय के द्विवर्षीय बी.एड. पाठ्यक्रम में बाल अधिकार प्रजातांत्रिक शिक्षा, शान्ति शिक्षा तथा लेंगिक समानतो को स्पष्ट किया गया है।

(vi) कोटा विश्वविद्यालय के द्विवर्षीय बी.एड. पाठ्यक्रम विद्यालय प्रबंधन की स्पष्ट जानकारी प्रदान करता है।

(vii) कोटा विश्वविद्यालय के द्विवर्षीय बी.एड. पाठ्यक्रम शिक्षा के अर्थ, अवधारणा, सिद्धान्तो तथा उद्देश्यो पर विस्तृत विवेचन प्रस्तुत करता है।

(viii) कोटा विश्वविद्यालय के द्विवर्षीय बी.एड. पाठ्यक्रम में विभिन्न शिक्षाविदो एवं दार्शनिको के विचारो को शामिल किया गया है।

(ix) कोटा विश्वविद्यालय के द्विवर्षीय बी.एड. पाठ्यक्रम बालक की अभिज्ञान क्षमता को विकसित करके आजीविका कमाने का साधन प्रस्तुत करने में सहायक सिद्ध होती है।

उपसंहार – प्रस्तुत शोध कार्य का उद्देश्य कोटा विश्वविद्यालय के द्विवर्षीय बी.एड. पाठ्यक्रम का विश्लेषणात्मक अध्ययन करना था। प्रस्तुत शोध के आधार पर यह निष्कर्ष प्राप्त हुआ कि कोटा विश्वविद्यालय के द्विवर्षीय बी.एड. पाठ्यक्रम में छात्राध्यापक के कौशल को विकसित करने के लिए सभी पक्षो पर दृष्टिपात किया गया है। अतः यह पाठ्यक्रम निश्चित ही शैक्षिक उन्नति में सहायक होगा। यह शोधकर्ता द्वारा प्रस्तुत अध्याय में अपने शोधकार्य का औचित्य, शोध प्रश्न, शोध उद्देश्य, पारिभाषिक शब्दों की व्याख्या, न्यादर्श, अध्ययन विधि प्रविधि एवं उपकरण सभी पक्षों का स्पष्टीकरण दिया गया।

अन्त में शोधार्थी अपने शोध कार्य के प्रस्तुत प्रतिवेदन का इस आशा के साथ समापन करना चाहती है कि उसका यह विनम्र प्रयास मुख्य रूप से शिक्षा के क्षेत्र में अपना महत्वपूर्ण योगदान करने में सक्षम होगा।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

❖ प्राथमिक स्त्रोत – कोटा विश्वविद्यालय कोटा का द्विवर्षीय बी.एड. पाठ्यक्रम

❖ पुस्तकें :–

- अस्थाना विपिन (1994) मनोविज्ञान और शिक्षा में मापन और मूल्यांकन, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा, (उत्तर प्रदेश)।
- भटनागर आर.पी. बी.मीनाक्षी (1998) एज्येकेशन, रिजर्व इन्टरनेशनल पब्लिकेशर्स मेरठ।
- भटनागर आर.पी. (2003) शिक्षा अनुसंधान इन्टरनेशनल पब्लिशिंग हाउस मेरठ 25001.
- चौबे, सरयु प्रसाद (1995) तुलनात्मक शिक्षा. आगराः विनोद प्रस्तक मंदिर।
- ढौढ़ियाल, एस., फाटक, ए. (2003). शैक्षिक अनुसंधान का विधिशास्त्र जयपुर राजस्थान हिन्दी अकादमी।

- ढोंढियाल, एवं फाटक, ए.बी. (1996) शैक्षिक अनुसंधान का विधिशास्त्र जयपुर राजस्थान हिन्दी अकादमी, पृ.92
- दाधीच एल.के.एण्ड, ए.पी. सक्सेना (2002) जैव विविधता Strategies for Conservation (ए. पी.एच. पब्लिकेशन उदयपुर)।
- ढीडियाल सच्चिदानन्द एवं पाठक अरविन्द (1972) शैक्षिक अनुसंधान का विधि शास्त्र राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी जयपुर।
- गुप्ता, अल्का, गुप्ता, एस.पी. (2007) शैक्षिक मापन एवं मूल्यांकन का विज्ञान इलाहाबाद : शारदा पुस्तक भवन।
- गुप्ता, एस.पी. (2006) आधुनिक मापन एवं मूल्यांकन इलाहाबाद : शारदा पुस्तक भवन।
- गुड, सी.वी., स्केट्स (1964). मेथड्स ऑफ रिसर्च. न्यूयार्क : एण्लीटन सेन्चुरी क्राफ्ट्स।
- गुप एम.पी. (2006) पर्यावरण चिन्तन (राजस्थान विज्ञान शिक्षा परिषद एवं पर्यावरण परिषद कोटा (राज.)।
- कपिल एच.के. (1985) अनुसंधन विधियाँ हर प्रसाद, कचहरी घाट, आगरा
- कपिल, एच.के. (2009). सांख्यिकी के मूल तत्व. आगरा : श्री विनोद पुस्तक मंदिर।
- कुमार रंजित (1979) रिसर्च मैथडोलोजी डाईलिंग काडरसिले पब्लिकेशन नई दिल्ली
- रायजादा, वी.एस. (1997). शिक्षा में अनुसंधान के आवश्यक तत्व. जयपुर : राजस्थान हिन्दी ग्रंथ अकादमी।
- रैना एम.के. 1999 एजेकेशनल रिसर्च अशीम प्रिन्टर्स दिल्ली।
- शर्मा पी.डी. (1990) पारिस्थितिकी और पर्यावरण (रस्तोगी पब्लिकेशर्स मेरठ उ.प्र.)।
- शर्मा आर.के. 2008 एजेकेशनल रिसर्च इन्टरनेशनल प्रिन्टर्स टाईम दिल्ली।

❖ SURVEY REPORT:

- Indian Educational Abtract (1997). Vol-7, New Delhi : NCFTE-09
- National Curriculum Framework Review (2005). Vol.-I, National Focus Groups, New Delhi : NCERT.
- Dictionary of Education (1959). II Ed. New York : McGraw Hill Book Company Inc.
- Winifred, R. Merkel (1959). Dictionary of Education. New York McGraw Hill Book Company Inc.
- Hindi Position Papers (2005): Vol.-I National Focus Groups, New Delhi : NCERT.

- Buch, M.B. (1983-1988): Fourth Survey of Research in Education. New Delhi : Vol.-I , NCERT.
- Buch, M.B. (1988-1992): Fifth Survey of Research in Education. New Delhi : Vol.-I , NCERT.
- Buch, M.B. (1988-1992): Sixth Survey of Research in Education. New Delhi : Vol.-I , NCERT.
- National Education Policy 2019